पंचम अध्याय

शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित सामाजिक समस्या —

पंचम अध्याय

शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित सामाजिक समस्या ---

साहित्य समाज का प्रतिफलन है। वह मानव प्रणीत होता है, मानव जिस समाज में रहता है वहाँ विभिन्न समस्याएँ दिखाई देती हैं। हरेक समस्या समाज से सम्बन्धित होने के कारण उन्हे सामाजिक समस्या कहना गलत न होगा। प्रत्येक युग में सामाजिक समस्याओंका स्वरूप अलग अलग दिखाई देता है।

शिवानी के लघु उपन्यासोंमें जो समस्या चित्रित हुई है। वह यथार्थ धरातल पर अंकित है।

अ) वैवाहिक समस्या --

१) प्रेम विवाह

२) दहेज प्रथा

३) अनमेल विवाह

४) बहुपत्नित्व की समस्या

५) अन्तर्जातीय विवाह

६) कुलगोत्र

७) वर्ण विद्वेष

८) परित्यक्ता एवं परित्यक्त की समस्याएँ।

आ) नारियोंकी समस्या

१) बलात्कारी नारी

२) गुनाहगार नारी

३) नौकरी [redacted] पेशा नारियोंकी समस्या

४) उच्चशिक्षित नारियों की समस्या

५) सुंदरता एक समस्या

६) नारी के आभूषण विषयक प्रेम की समस्या

७) वेश्या समस्या

८) विधवा समस्या

९) अवैध मातृत्व की समस्या

१०) भ्रूण हत्या की समस्या

११) स्त्री का कुण्ठा ग्रस्त जीवन।

इ) विविध समस्याए ---

१) अनाथ बच्चों की समस्या

२) वृध्द समस्या

३) शराब पान की समस्या

४) अंध:विश्वास की समस्या

५) राजनीति में शील भ्रष्ट व्यक्तियों की समस्या

६) निर्धनता से उत्पन्न समस्या

७) रोगियों की समस्या

८) हरिजन समस्या

९) ऋण की समस्या

१०) आत्महत्या की समस्या

११) युद्ध की समस्या ।

इस पर जानकारी निम्नलिखित प्रकार से है।

अ) वैवाहिक समस्या --

१) प्रेम-विवाह की समस्या --

वैवाहिक समस्या के अन्तर्गत प्रेम विवाह की समस्या आ जाती है। प्रेम विवाह आज के आधुनिक युग की जटिल समस्या है। प्रेम विवाह में दम्पति जीवन सुखमय होगा ऐसा ठोस रुपसे नहीं कहा जा सकता। क्योंकि प्रेम में शारीरिक आकर्षण की मात्रा आधिक होती है और प्रेम विवाह असफल हो जाता है। परिणाम स्वरुप नारी या पुरुष के जीवन में नैराश्य छा जाता है। `कँजा` लघु उपन्यास में नंदी सुरेश के साथ प्रेम संबंधो में बंधी हुयी है। परंतु नंदी की जन्म कुंडली में विवाह के उपरान्त घोर वैधव्य है इसलिए नंदी के ज्योतिष्यी पिता उनका विवाह नही करवा देते।

`माणिक` लघु उपन्यास में नलिनी की बहन रंमा अपने प्रेमी के साथ भाग जाना चाहती है, नलिनी रंमा को अच्छी तरह समझाकर घर ले आती है। रंमा अपने प्रेमी से चाहने पर भी पारिवारिक बाधा के कारण प्रेम विवाह नहीं कर पाती। प्रस्तुत असफल प्रेम विवाह का उदाहरण है।

नारी जागरण एवं शिक्षा के कारण स्त्री-पुरुषों के परस्पर आकर्षण मे बान्धे जाने लगे है। `बदला` लघु उपन्यास में रत्ना नृत्य शीखने कलाक्षेत्र में जाती है। वहाँ शिक्षक अरुण मलहोत्रा से उसका प्रेम हो जाता है। अरुण से रत्ना जीवन साथी बनाना चाहती है। परन्तु रत्ना के पिता त्रिभुवननाथ रत्ना का विवाह अरुण से नही करवा देते क्योंकि अरुण अपने समकक्ष खान्दान का नहीं है।

`कृष्णावेणी` लघु उपन्यास में कृष्णावेणी भास्करन से प्रेम करती है वे दोनों विवाह करना चाहते है। लेकिन कृष्णावेणी के पिता भास्करन के खान्दान में कोढ

है इसलिए कृष्णावेणी के विवाह का विरोध करते है।

२) दहेज समस्या —

दहेज विवाह संस्था का अभिशाप है। दहेज प्रथा का प्रचलन पुरातन कालसे चला आ रहा है। आज भी सुशिक्षित ,सुसंस्कृत परिवारों में दहेज का लेन-देन चलता है।

'चौचरी' लघु उपन्यास में कुमाऊ पहाडी पद्धति से दहेज का वर्णन हुआ है। चौचरी श्रीनाथ के विवाह में 'पुरोहित पिताने यथासाध्य दहेज भी दिया था, वैसे तब पहाड की शादियों में दिया ही क्या जाता था। दामाद को जरीदार लाल दुशाला, रेशमी शॉल,बहुत हुआ तो एक घडी और एक अंगुठी। केशव पंडित ने पहली बार पहाड के नियमों को तोड वर के पिता के लिए भी एक दामी पश्मीना रख दिया था।'[१]

शिवानी के लघु उपन्यासों में जहाँ लाखों का दहेज पुत्री को दिया जाता है। 'रथ्या' लघु उपन्यास में ऐसे ही गरीब ब्राह्मण है जो केवल दो भैंसे देकर लडकी का विवाह करवाते है।

आजकल दहेज देने की ऐसी प्रतियोगिता हो रही है कि, लडकी के माँ-बाप ज्यादा से ज्यादा पैसे देकर अपनी पूत्री का विवाह कर लेना चाहते है। जैसे कि 'पूतोंवाली' लघु उपन्यास में पाँच पूत्रों के पिता शिवसागर दहेज की रकम सुन-सुनकर उलझन में पडे हुए हैं 'दहेज के नीलामी हथौडीं की चोटसे शिवसागर लगभग बहरे ही हो गये थे। एक चालीस हजार की घोषणा करता तो दुसरा पच्चास हजार , तीसरा पुत्री के साथ सजा सजाया फ्लैट और मारुति गाडी का तोहफा सजाए चला जाता।'[२]

---

१ चौचरी - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स - संस्क.,१९९१,पृ.२७।

२ पूतोंवाली - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स ,सरस्वती सीरीज, संस्क.,१९९१, पृ.२०।

'पाथेय' लघु उपन्यास में शिवानी ने दहेज न लेने ओर संकेत किया है। डा. तिलोत्तमा ठाकुर के विवाह अवसरपर अभिभावक कहते है कि - 'हमें दान-दहेज कुछ नहीं चाहिए बस यह सुंदरी कन्या चाहिए।'[१] प्रत्येक विवाह में इस प्रकार दहेज प्रथा का विरोध किया गया तो दहेज प्रथा समूल नष्ट हो जाएगी।

३) अनमेल विवाह —

"भारतीय समाज में अनमेल-विवाह एक भयंकर सामाजिक दोष है। नारी परतंत्र है, अत: बहुधा उसी का शोषण हुआ है।"[२] शिवानी के लघु उपन्यासोंमें अनमेल विवाह की झलक भी दिखाई देती है। कही कम उम्र की लडकियों की शादी अधिक उम्र के आदमी से की जाती है।

'रतिविलाप' लघु उपन्यास में हीरा का विवाह अनमेल विवाह है - विवाह के समय वह चौदह वर्ष की अबोध बालिका थी ... विवाह हुआ था, एक वृध्द पागल से, दिनरात इसे (हीरा को) पीटता था, नोचता था, खसोटता था।[३]

'पूतोंवाली' लघु उपन्यास में शिवसागर पार्वती का विवाह अनमेल विवाह ही है शिवसागर ने अपने पिता को वह इस बेमेल गठबंधन के लिए अन्त तक क्षमा नहीं कर पाया।'[४] क्योंकि शिवसागर के सम्मति के बिना पार्वती के साथ शिवसागर का रिश्ता तय किया था। प्रस्तुत विवाह में शिवसागर के विचारों का अनमेल है।

४) बहुपत्नीत्व की समस्या —

बहुपत्नीत्व समस्या प्राचीन काल से आज तक चली आ रही है। प्रस्तुत समस्या में नारी का जीवन कष्टमय होता है। द्विभार्या प्रतिबंधक कानून के अनुसार

१ पाथेय - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज,सं.९१,पृ.१०१।

२ भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युग चेतना - डॉ.बैजनाथ प्रसाद शुक्ल, प्रेम प्रकाशन मंदिर,प्र.सं.१९७७,पृ.८५।

३ रतिविलाप - शिवानी - सरस्वती विहार -द्वि.सं., १९७७, पृ.२१।

४ पूतोंवाली - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स, सं.१९९१,पृ.१४।

बहुपत्नित्व विवाह निशिध्द माना है।

(' रथ्या ' लघु उपन्यास में चिमलानंद बहुपत्निनत्व का समर्थन करते हुए कहता है कि,' मैं वसंती के बिना नही जी सकता सुरसती (सरस्वती) तु इसे अपनी सौत मानकर नही, छोटी बहन स्वीकार कर,तो उसे कभी आपत्ति नहीं होगी - हमारे पहाड में कितने ही बडे बडे आदमियों की दो दो पत्नियाँ है। ' [१])

' चाँचरी ' लघु उपन्यास में बहु पत्नीत्व विवाह का रुप इसलिए नही दिखाई देता की,माता-पिता के लाख चाहने पर श्रीनाथ ने प्रथम पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह नही किया ' बरसो बीत गये,श्रीनाथ के माता-पिता जब तक जीवित रहे,उससे दूसरा विवाह करने के लिए बार-बार कहते रहे। बहन प्रेमा ने तो एक बार अपनी एक कन्वेंट शिक्षित सहेली की चचेरी बहन से रिश्ता भी लगभग पक्का कर दिया था। पर श्रीनाथ ने विवाह नही किया था। [२] ' (इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में विस्तार से तो नही पर संक्षिप्त रुपमें बहुपत्नी विवाह के संकेत मिलते है।)

५) अन्तर्जातीय विवाह --

भारत में जातिप्रथा के कारण विवाह के बंधन अधिक कठोर हो गये है। विवाह करना है तो अपनी जाति-पाति में ही करना पडता है। जाति-पाति के बंधन तोडकर आधुनिक समाज में विवाह हो रहा है वह विवाह अन्तर्जातीय विवाह की श्रेणी में आ जाते है।

' पाथेय ' लघु उपन्यास में माधव बाबू को डर है कि, कहीं उसके पुत्र ने अन्तर्जातीय विवाह तो नही कर लिया इसी ओर संकेत किया है।

' बदला ' लघु उपन्यास में रत्ना अरुण मलहोत्रा से विवाह करना चाहती है,परन्तु रत्ना के पिताजी इस विवाह का विरोध करते है। रत्ना के पक्ष का

---

१ रथ्या - शिवानी - सरस्वती विहार - द्वि.संस्क.,१९७७, पृ.४२।
२ चाँचरी - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स - अरक्षरण १९९१ पृ.३१,३२।

समर्थन करते हुए रत्ना की माँ कहती हैं `वह तो गनीमत समझिए कि, लड़की ने कम-से-कम हिन्दू लड़का तो छोटा अपने उन आई.जी.को ही लीजिए - लड़का मुसलमान बहू ले आया तो क्या कर लिया उन्होंने ?`[१]

`पूतोंवाली` लघु उपन्यास में अजय हिंदू है,एक बार वह अस्पताल में भर्ती हो गया था। अस्पताल की केरल नर्स से अजय विवाह करता है, परिवार के शुभ कार्यों में अजय को शामिल नहीं किया जाता क्योंकि उसने अन्तर्जातीय विवाह किया है, इस प्रकार अन्तर्जातीय विवाह दम्पति की शुभ कार्य के अवसर पर अवहेलना की जाती है।

६) कुलगोत्र की समस्या --

शिवानी के कुछ लघु उपन्यासों में कुल गोत्र की समस्या को बहुत अच्छे ढंग से चित्रित किया है। कुमाऊंनी के गाँवों में आज भी विवाह सम्बन्ध कुलगोत्र देखकर किये जाते है।

`कैंजा` लघु उपन्यास में कुलगोत्र के सम्बन्ध में लिखा है `आज से बीस वर्ष पूर्व विवाह सम्बन्धी कुमाऊंनी आईन कानून बेहद कठोर थे। एक विशिष्ट संकुचित वैवाहिक दायरे में विवशता से घूमते माता-पिता कभी-कभी अपने से नीचे वर्जित कुल में उसके लाख समृध्द होने पर भी पुत्री को ब्याहने की धृष्टता नहीं कर सकते थे। चाहे वह चिर दरिद्र क्यों न हो, चाहे पुत्री जन्म भर अन्न के दाने को ही क्यों न तरसती रहे, जामाता यदि अपने कुलगोत्र का वीसा प्रस्तुत कर देता तो किला फतेह कर सकता था।`[२]

`कृष्णवेणी` लघु उपन्यास में कृष्णवेणी के कुल परम्परानुसार` उसके छोटे मामा से ही उसका (कृष्णवेणी का) विवाह होगा, यही उनके कुल की परम्परा थी। उनके बड़े मामा तथा मझले मामा को उसकी सगी मौसेरी बहनें

---

१ बदला - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सं.१९९१, पृ.५७।

२ कैंजा - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज,सं.१९९१, पृ.१६।

ब्याही थी[१]। "कृष्णवेणी" लघु उपन्यास में कृष्णवेणी का प्रेम भास्करन से है, भास्करन से कृष्णवेणी विवाह करना चाहती है, परंतु भास्करन के पिता को कोढ है उसका खानदान भी कोढ ग्रस्त है इसलिए कृष्णवेणी के पिताजी उनका विवाह नही होने देते।

७) वर्ण विद्वेष की समस्या ---

प्रस्तुत समस्या एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। आज भी विश्व में अनेक ऐसे देश है, जहाँ काला-गोरा भेद किया जाता है। यहाँ तक की काले-गोरे व्यक्तियों के बीच विवाह सम्बन्ध वर्जित माने जाते है।

'विवर्त' लघु उपन्यास में आर्थर नीग्रो कृष्णवर्णीय युवक है - 'एक बढ़ई की श्वेतांगिनी पुत्री आर्थर के प्रेम में पागल-सी हो गयी थी। माता-पिता से विद्रोह कर वह स्वयं ही उससे विवाह करने लंदन से वहाँ भाग आई थी, पर आर्थर ही उसे फिर उसके घर पहुँचा आया था। कहने लगा 'मैंने उसे समझा दिया है, विवाह होगा तो बच्चे भी होंगे, फिर उन्हे स्कूल में वर्ण विद्वेष की आग में झुलसना होगा जीवन-भर वे उसी कुण्ठा से दग्ध होते रहेंगे, झुलसते रहेंगे मैं झुलसा हूँ।'[२]

८) परित्यक्त्या - एवं परित्यक्त की समस्या --

विवाह के बाद पति पत्नि से त्याग दियाजाता है परंतु कानून से विवाह विच्छेद नही होता। और वे दोनों पति-पत्नि नही रहते। इस समस्या का जिक्र 'विवर्त' लघु उपन्यास में हुआ है। सुधीर लीला से विवाह करके फिर अकेला लंदन चला जाता है। अपने घर पर आयी लीला से वह पूछता तक नही, यहाँ लीला परित्यक्त्या है।

---

१ कृष्णवेणी - शिवानी - सरस्वती विहार - प्रथम संस्क.,१९८१,पृ.१९।

२ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स, प्रथम संस्क.,१९८४,पृ.५९।

पत्नी- द्वारा पुरुष को त्याग देने का कथन 'चौचरी' लघु उपन्यास में चित्रित है। चौचरी पर श्वसुर के लोग चोरी का झूठा इल्जाम लगवाते है, चौचरी घर छोड़कर अपना जीवन तपोभूत बनाती है। शिवानी के लघु उपन्यासों में तलाक समस्या नही दिखाई देती।

आ) नारियों की समस्या —

'आधुनिक भारतीय उत्थानकाल में समाज सुधारकों तथा उपन्यासकारों ने अगर किसी समस्या को सर्वाधिक महत्वपूर्ण और गंभीर समस्याके रुप में उठाया है तो वह है नारी समस्या'[१] नारियों के सन्दर्भ में समाज में अनेक समस्याएँ है। शिवानी के लघु उपन्यासों में नारियों की जो समस्याएँ है वह निम्नलिखित है।

१) बलात्कारी नारी का जीवन --

बलात्कार के सन्दर्भ में नारी सदैव पिसती आयी है, नारी अबला है, दुर्बल पुरुष के अत्याचार का वह सदैव शिकार बनती है। बलात्कार स्त्री का उर्वरित जीवन कुण्ठाग्रस्त एवं अभिशापमय होता है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में बलात्कार सम्बन्धी चित्रण अत्यंत संयमपूर्ण, सांकेतिक,प्रतीकात्मक भाषाशैली में चित्रित किया है।

'रथ्या' लघु उपन्यास में वसंती गांव छोडकर सर्कस में दाखिल हो जाती है। वहाँ सर्कस मैनेजर एक रात वसंती का कौमार्य भंग कर देता है। वसंती उस रात में पलायन करती है। वसंती नृत्यांगना,वेश्या बनती है। उसका जीवन कुण्ठाग्रस्त बन जाता है।

'तर्पण' लघु उपन्यास में पुष्पापन्त के साथ १३ साल की उम्र में भोलादत्त जबरदस्ती करते है, पुष्पापन्त के मां-बाप इस सदमें से चल बसते है। कुछ वर्षो-

---

१ भगवतीचरण वर्मा - के उपन्यासों में युगचेतना - डा.बैजनाथ प्रसाद शुक्ल - प्रेम प्रकाशन मंदिर - प्र.सं.,१९७७ , पृ.७१।

-परान्त भोलादत्त पुष्पा के स्कूल में मंत्री बनकर आते है तब पुष्पा अपने बलात्कार का बदला भोलादत्त का सिर फुडवा के लेती है। इस प्रकार पुष्पा का उर्वरित जीवन अविवाहित,कुण्ठाग्रस्त है।

२) गुनाहगार नारी —

"आधुनिक युग में नारी के शिक्षित हो जाने एवं नारी पर आधुनिक शिक्षा का प्रभाव पडने से शिक्षित दम्पति के व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास में अनेक अपराधों की अवतारणा हो रही है।[१] नारी पर अत्याचार,अन्याय हो गये तब उसने अपनी अमर्यादाओं को छोडकर शास्त्र हाथ में ले लिया।

`तर्पण` लघु उपन्यास में पुष्पा पंत की १३ वर्ष की अबोध आयु में भोलादत्त पुष्पा का शील भंग करवा देता है। उसका बदला पुष्पा भोलादत्त मंत्री बनकर जब उसकेही स्कूल में आते है तब'कुछ ही घण्टों पूर्व तम्बू गाडने लाया गया बडा सा धन वही पडा था। लपझाकर उसने उठाया और दोनों से पकडकर दन्न से भोलादत्त उसके सिरपर दे मारा।'[२] भोला की मृत्यु हो जाती है और पुष्पा अपने अन्याय का बदला लेती है।

`कैंजा` लघु उपन्यास में नारी का पतिहंता रुप दिखाई देता है। मालदारिन का पति अपने पत्नि के गोरे साहब के साथ अनैतिक सम्बन्ध देखकर नौकरी छोडकर उसे गांव ले आता है। पति-पत्नि में सतत कलह होता है। मालदारिन अपने पति को विष दे देती है - मरते समय वह कहता है `इसी हत्यारिन ने मुझे कुछ खिला दिया है गुरु। कसम खाकर कहता हू, चाय में कुछ घोल दिया है इसने।'[३]

---

१ महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता - डा.शशि जेकब - जवाहर पुस्तकालय, प्र.संस्क.,१९८९, पृ.४२।

२ तर्पण - शिवानी - सरस्वती विहार - प्र.संस्क्,१९७७, पृ.८० और ८१।

३ कैंजा - शिवानी - हिन्द पौकेट बुक्स - संस्करण,१९९१, पृ.३१।

' रतिविलाप ' लघु उपन्यास में हीरा दो हत्याए करवा देती है - एक अपने पति की तो दूसरी वृध्द प्रेमी की।

' बदला ' लघु उपन्यास में रत्ना अपने पति ब्रजकुमार की हत्या करवा देती है और स्वयं कहती है - ' मैंने उसकी हत्या की है। ' [१]

' माणिक ' लघु उपन्यास में दीना बाटलीवाला हत्यारिन है, उन्होंने,अपने पति की, नलिनी और लक्ष्मी की तीन हत्याए करवा दी है।

' विषकन्या ' लघु उपन्यास में कामिनी विष से मरी है, कामिनी जिस व्यक्ति से शरीर सम्बन्ध रखती है वह व्यक्ति मर जाता है। अपने बहन का पति भी कामिनी का शिकार बन जाता है।

३) नौकरी पेशा नारियों की समस्या --

प्राचीन काल में नारी के लिए शिक्षा वर्ज्य थी, परन्तु आधुनिक काल में नारी शिक्षा के कारण नौकरी करने लगी है। नौकरी करनेवाली नारियों की समस्याओंका चित्रण शिवानी के लघु उपन्यासों में मिलता है।

' रथ्या ' लघु उपन्यास में वसंती उदर निर्वाह के लिए सर्कस में दाखिल होती है। वहाँ का सर्कस मैनेजर वसंती का शील भ्रष्ट कर देता है। इस प्रकार नौकरी करनेवाली युवतियों के लिए अपने शील का रक्षण करना एक समस्या मात्र है।

नौकरी के कारण अपनी जान भी देनी पड़ती है। ' गैंडा ' लघु उपन्यास में राज होटल में रिशेप्सनिस्ट की नौकरी करती है। एक बार फूड पोइजनिंग की वजह से उसकी मृत्यू हो जाती है।

' विवर्त ' लघु उपन्यास ललिता हेडमिस्ट्रेस है वह विवाह नही करना चाहती आनेवाले सभी रिश्तों को ठुकरा देती है; और सुधीर से विवाह होने पर सुधीर

---

१ बदला - शिवानी - हिन्द पौकेट बुक्स - संस्क.,१९९१, पृ.८१।

नौकरी के लिए लंदन चला जाता है। वहाँ से उसे खत तक नहीं भेजता। इस प्रकार ललिता का जीवन कुण्ठाग्रस्त एकाकी बना हुआ है।

'कैंजा' लघु उपन्यास में नायिका नंदी डाक्टर है सुरेश के साथ विवाह करना चाहती है। ज्योतिषी पिता के विरोध के कारण खुद अपना जीवन साथी नही चुन पाती। अन्त में मरणासन्न सुरेश के साथ विवाह कर पाती है परंतु उसे सुरेश का पति प्रेम नही मिलता।

'विषकन्या' लघु उपन्यास में कामिनी हवाई सुंदरी है। जिससे प्रेम करती है वह व्यक्ति कामिनी के साथ शरीर सम्बन्ध आने पर मर जाता है। कामिनी के जहरीले पन के कारण वह अपने जीवन में किसी एक पुरुष को जीवन साथी के रुप में नही पाती।

शिवानी के लघु उपन्यासों में नौकरी पेशा नारियाँ विपरित परिस्थिति में भी अपना कार्य करती है। किसी के उपर बोझ बनकर नही रह सकती।

४) उच्च शिक्षित नारी की समस्या —

आधुनिक युग में नारी शिक्षा को अत्यन्त महत्व प्राप्त हुआ है। नारी, शिक्षा के कारण आत्मनिर्भर हो गयी है। चुल्हा जलाना उसका कार्य क्षेत्र था मगर वह आज उच्च पदस्थ अफसर या देश की राजनीति में भाग लेनेवाली नारी है। उच्चशिक्षित नारियाँ शिवानी के लघु उपन्यासों की विशेषता है। वह उच्च शिक्षित होते हुए भी स्वयं अपना निर्णय नही ले सकती।

'कैंजा' लघु उपन्यास में नंदी तिवारी डाक्टर बन गयी है। वह सुरेश भट्ट से प्रेम करती है। वह सुरेश से जीवन साथी बनाना चाहती है। परंतु जन्मकुंडली में विवाह के उपरान्त घोर वैधव्य है इसलिए वह विवाह नही करती। नंदी डाक्टर होकर भी खुद का जीवन साथी नही चुन पाती। पहाडो में उच्चशिक्षित लडकियों के लिए वर नही मिलते नंदी अपने समाज की परपरांगत रुढियों को नही तोड पाती।

' माणिक ' लघु उपन्यास की नायिका नलिनी पंत स्कूल इंस्पेक्ट्रेस बनी है। अपनी बहन रंमा के लिए वह अपने यौवन का गला घोट देती है ,आजन्म कौमार्यव्रत धारण करती है।

' तर्पण ' लघु उपन्यास में पुष्पा पन्त हेडमिस्ट्रेस है। १३ साल की अल्पायु मोलादत्त नरव्याघ्र ने उसे अपनी वासना का शिकार बनाया था। इसी लम्हे को याद करके आजन्म वह घुंटनपूर्ण जीवन जी रही है।

' गैंडा ' लघु उपन्यास में राज और सुपर्णा दोनों सहेलियाँ सिनियर कैंब्रिज पढी है। दोनों ने विवाह किये है परन्तु वह दोनो जीवन में सुखी नही है।

' कृष्णावेणी ' लघु उपन्यास की नायिका कृष्णावेणी विलायत से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त करके आयी है। कृष्णावेणी से दिव्य दृष्टि प्राप्त है। इसलिए उनके पिताजी उसका विवाह नही करवाते। कृष्णावेणी भास्करन से चाहनेपर भी उसका विवाह नही हो पाता।

' मोहब्बत ' लघु उपन्यास में वैदेही इतिहास की डाक्टरेट उपाधि प्राप्त कर चुकी है। प्रो. रौबर्ट लीन से वह अनैतिक सम्बन्ध से एक बच्चे की मां बन जाती है। रौबर्ट उसे धोखा देकर विलायत चला जाता है।

' विवर्त ' लघु उपन्यास में लीलावती एम.ए.कर चुकी है। वह हेडमिस्ट्रेस है। वह विवाह नही करना चाहती और आनेवाले सभी रिश्तों को ठुकरा देती है। बादमे सुधीर से विवाह करके फँस जाती है।

' तीसरा बेटा ' लघु उपन्यास में सावित्री,एम.ए.पढी है। विधवा सावित्री के दो बेटे है। अनाथ गंगाधर उसे सगे बेटो से अधिक प्यार करता है। सावित्री की समस्या है कि वह वृध्दावस्था में कोई बेटा उसे आधार नही देता, बल्कि गंगाधर अपनी माँ मानकर अत्येंष्टि कार्य पूरा करवा देता है।

' बदला ' लघु उपन्यास में रत्ना नैनिताल से उच्च शिक्षा पूरी करके आयी है। संगीत शिक्षक अरुण से वह विवाह करना चाहती है परंतु पिताजी के विरोध से ब्रजकुमार दूर से उसे विवाह करना पडता है।

शिवानी के लघु उपन्यासों की नायिकाएँ विवाह से संबंधित फैसले अपने पिता पर सौंप देती है। पिता के मत का समर्थन करती है। भले वह अपने प्रेमी से विवाह करने के लिए क्यों न विरोध करें।

५) सुन्दरता - एक समस्या —

शिवानी के लघु उपन्यासों में प्राय: सभी नायिकाएँ अपरुप सुन्दरी है। "विषकन्या" लघु उपन्यास में स्वयं लेखिकाने लिखा है कि ' मेरी प्रत्येक नायिका अपरुप सुंदरी ही कैसे हो जाती है। यह उपालंभ एक बार फिर मुझे बींधे, इससे पूर्व ही मेरा नम्र निवेदन है कि इस बार दोषी मैं नही हूँ। एक तो यह नायिका नही, स्वयं विधाता की कृति है, इसीसे इसके अपूर्व रुप-लावण्य की सशक्त अभिव्यंजना में मेरी लेखनी एक ईमानदारी स्वामिभक्त स्टेनो की ही भाँति, अपने प्रभू का डिक्टेशन मात्र ले रही है।[१] ' विषकन्या लघु उपन्यास में कामिनी के सौन्दर्यता पर मोहित बहन का पति चल बसता है। कामिनी का सौन्दर्य उसे किसी एक व्यक्ति की नही बना देता।

' कैंजा ' लघु उपन्यास में नंदी के सौन्दर्य पर रीझाकर सुरेश उसे कहता है ' नाश हो इस स्वर्ग की मेनका का, जिसने मुझ जैसे विश्वामित्र की तपस्या भंग की।[२] इस प्रकार दोनों एक दूसरे के नहीं हो पाते।

' चांचरी ' लघु उपन्यास की नायिका चांचरी जो परी के समान सुन्दर है। उसके सौन्दर्य पर मोहित होकर उसे श्रीनाथ अपनी जीवन संगिनी बनाता है। परंतु श्रीनाथ का गृहस्थी जीवन उघेड जाता है।

' पाथेय ' लघु उपन्यास में नायिका डा. तिलोत्तमा ठाकूर से देखकर माधव बाबू अपने पुत्र प्रतुल के लिए बहू बनाने का निर्णय लेते है। इतनाही नही वे कहते है कि ' हमें दान-दहेज कुछ नहीं चाहिए बस यह सुंदरी कन्या चाहिए।[३] प्रतुल

१ विषकन्या-शिवानी- हिन्द पॉकेट बुक्स - सं., १९७२, पृ. ११।
२ कैंजा - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स, सरस्वती सीरीज, सं. १९९१, पृ. १५।
३ पाथेय - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स, सं. १९९१, पृ. १०१।

टी.बी.रोग से ग्रस्त है। वह थोडे दिनों में चल बसता है। तिलोत्तमा विधवा बनती है। इस प्रकार उसका सौन्दर्य उसे वैधव्य की ओर ले जाता है।

`किशनुली का ढाँट` लघु उपन्यास में किशनुली पगली है, किन्तु अपरुप सुन्दरी है। उसके सौन्दर्य को देखकर किशनुली का कक्का अपने घर में पनाह देते है। कक्का किशनुली के सौन्दर्य पर मोहित होकर उसे अपनी वासना के जाल में फँसा देते है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित अपरुप नायिकाएँ किसी न किसी रुप में उनका सौन्दर्य उसे किसी न किसी समस्या में फँसा देता है।

६) नारी का आभूषण विषयक प्रेम --

आभूषण नारी मन की कमजोरी है, आभूषण का अत्याधिक मोह नारी के लिए समस्या बन जाता है।

`माणिक` लघु उपन्यास में लेखिकाने नारी के आभुषण विषयक प्रेम की समस्या ओर संकेत किया, `माणिक` लघु उपन्यास की नायिका नलिनी के पिता का विचित्र आदेश था कि `यदि नलिनी अविवाहित ही रही, तो यह अंगूठी उसके गहनों के साथ उसे ही दी जाए यदि रंमो कुंमारी ही रही तो अंगूठी भी अपने हिस्से के गहनों के साथ उसे मिले, पर यदि दोनों का विवाह हो जाए तो माणिक बेच दी जाए। प्राप्त धनराशि दोनों बहनों में समान रुप से बाँट दी जाए।`[१] रंमा तो विवाह करके श्वसुर चली जाती है। इसलिए उसका माणिक की अनमोल अंगूठी पर कोई अधिकार नहीं रहता। नलिनी आभूषण के अत्याधिक मोह के कारण विवाह नही करती। अत: में दीना बाटलीवाला का आभूषण प्रेम फुट पडता है और वह माणिक की अंगूठी लेकर नलिनी का खून करके भाग जाती है।

---

१ माणिक - शिवानी - सरस्वती विहार - प्रथम संस्करण, १९७७, पृ.३७।

७) वेश्या समस्या --

वेश्या समस्या समाज की जटिल समस्या है। `वेश्या संबंध यौन संबंध का ही एक दूसरा रूप है। पुरुष इसी उद्देश्य से वेश्या के पास पहुँचता है कि उसकी यौन संबंधी शारीरिक आवश्यकताएँ तुष्ट हो जाएँ। स्त्री इसलिए वेश्या-वृत्ति धारण करती है कि उसका अपने जीवन में कभी भूल से या मनुष्य के बल प्रयोग से सामाजिक बंधनों, धर्म और संस्कृति की दृष्टिसे शील भ्रष्ट होना पड़ता है। अत: उसे जीवन यापन के लिए वेश्या जीवन के बिना दूसरा पर्याय नही होता।'[१] प्रस्तुत बात का संकेत `रथ्या` लघु उपन्यास में मिलता है, बसंती घर छोड़कर जीवन यापन करने के लिए सर्कस में दाखिल होती है। वहाँ का सर्कस मैनेजर वसंती का शील भ्रष्ट कर देता है। सर्कस छोड़कर वसंती वेश्या बन जाती है। वेश्या समाज के लिए कलंकमात्र है और उसके लिए पुरुष जिम्मेदार है।

`करिए छिमा` लघु उपन्यास में हीरावती वेश्या है। वह एक प्रेमी को बचाने के लिए अपने संतान की हत्या कर देती है।

`कैंजा` लघु उपन्यास में सुरेश की प्रथम पत्नी पार्वती वेश्या है। वह सुरेश के जीवन में साथ देने वाली वेश्या है।

`बदला` लघु उपन्यास में ब्रजकुमार की स्टेनो वेश्या है। वह एक मित्र के सहचारिणी है इस प्रकार शिवानी ने वेश्याओंको विविध रुपों में चित्रित किया है।

८) विधवा समस्या ---

भारतीय समाज में विधवा जीवन अभिशापित है। विधवा के साथ विवाह नही किया जाता परंतु तर्पण उपन्यास में शिवानी ने विधवा विवाह की ओर संकेत किया है - भोलादत्त की` माँ बचपन में मर गयी थी और पिताने किसी असमी

---

१ प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का अनुशीलन - प्रा.भा.ए.गवळी - अन्नपूर्णा प्रकाशन,प्र.सं.१९८३,पृ.६७।

विधवा से विवाह कर लिया था ।` [१]

शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित विधवा आर्थिक परावलंम्बी न होकर आत्मनिर्भर दिखाई देती है। "रति विलाप" लघु उपन्यास में अनुसूया विधवा है, अनुसूया के श्वसुर भी विधुर है, वे कहते है कि समाज तो सगे भाई-बहन के एकान्तवास को भी कभी अच्छी दृष्टिसे नही देख सकता फिर दुर्भाग्य से मैं विधुर और तुम विधवा हो। [२] ` शायद लेखिकाने विधवा विवाह की ओर संकेत किया होगा ? अनुसूया अपने श्वसुर को लेकर बम्बई जाती है, वहा साडी सेंटर खुलवा देती है। वह विधवा होकर किसी के उपर बोझ बनकर नही रहना चाहती।

"करिए छिमा" लघु उपन्यास की नायिका हीरावती विधवा है। बहन के पति से अनैतिक सम्बन्ध रखने पर हीरावती को ग्राम से बहिष्कृत कर दिया जाता है। बहिष्कृत करने पर वह स्वयं सेब बेचती है और अपना जीवन यापन करती है।

` तीसरा बेटा ` लघु उपन्यास में सावित्री विधवा है। अनिरुध्द,अशोक दो सगे बेटे है। वे विलायत में नौकरी कर रहे है। अनाथ गंगाधर को सावित्री अपना तीसरा बेटा मानती है। सावित्री की बीमारावस्था में सगे बेटे शुश्रुषा नही करते परंतु गंगाधर उसकी सेवा अपनी सगी माँ समझकर करता है। इतनाही नही सावित्र का दाह संस्कार गंगाधर करता है।

` पाथेय ` लघु उपन्यास में डा.तिलोत्तमा ठाकुर विधवा है, उसका उर्वरित जीवन कुण्ठा ग्रस्त एवं समस्याओं से भरा हुआ मालूम पडता है। इस प्रकार विधवा समस्याओंका जिक्र शिवानी के लघु उपन्यासोंमें हुआ है।

९) अवैध मातृत्व —

अवैध मातृत्व प्राचीन काल से चली आयी समस्या है। स्त्री का अविवाहित

---

१ तर्पण - शिवानी - सरस्वती विहार - प्र.संस्क.,१९७७ - पृ.६९ ।

२ रतिविलाप - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स - द्वितीय संस्क.,१९७७, पृ.१९ ।

अवस्था में माँ बन जाना समाज के लिए कलंक माना जाता है। प्रस्तुत समस्या में पुरुष आसानी से छूट जाता है, नारी को अपने जीवन पर्यन्त उसका दण्ड भुगतना पड़ता है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में अवैध मातृत्वका चित्रण परंपरागत रुप से हुआ है। और इस समस्या की मूल से भ्रूण हत्या की उपज होती है।

`करिए छिमा` लघु उपन्यास में हीरावती - श्रीधर के शारीर सम्बन्ध आनेपर जो बच्चा पैदा होता है हीरावती उसकी हत्या करवा देती है।

`कैंजा` लघु उपन्यास में सुरेश मालदारिन की पगली लड़की के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखनेपर रोहित का जन्म होता है। पगली लड़की बसंती है। और सुरेश के साथ नंदी विवाह करके रोहित की सौतली माँ का भार सह लेती है।

`किशनुली का ढाँट` लघु उपन्यास में कक्का-किशनुली पर आसक्त होकर उसे अपनी वासना का शिकार बनाते है। कर्ण नाम का बेटा किशनुली का अवैध पुत्र है।

`तीसरा बेटा` लघु उपन्यास में गंगाधर अवैध पुत्र है जिसके माँ-बाप का कोई पता नही है।

`मोहब्बत` लघु उपन्यास में डा. वैदेही बवें के साथ रॉबर्ट लीन बैंगलूर जाते है वहाँ प्रणय सूत्र में बाँधे जाने पर वैदेही को गर्भ रह जाता है। यहाँ वैदेही अवैध मातृत्व की समस्या का उदाहरण है।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित अवैध मातृत्व का रुप अनूठा है कैंजा की नंदी केवल रोहित के लिए अपना जीवन दाँव पर लगा देती है। तो "करिए छिमा" की हीरावती प्रेमी को बचाने के लिए अपने बच्चे को नदी में डुबा देती है।

१०) भ्रूण हत्या --

भ्रूण हत्या अवैध मातृत्व से जुडी समस्या है। धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो भ्रूण हत्या पाप है।'करिए छिमा' लघु उपन्यास में हीरावती - श्रीधर के अनैतिक संबंधों में जो बच्चा पैदा होता है। उसकी हत्या हीरावती करवा देती है। मंत्री बने श्रीधर की बदनामी न हो जाए इसलिए अपने नवजात शिशु की हत्या करनेवाली हीरावती प्रेमी के प्रति उदात्त दृष्टिकोण दिखाई देता है। 'अलक नंदा में अपने नवजात शिशु पुत्र की मूठी डुबोए,हीरावती को ग्राम के डाकिए ने देखा और जब तक वह भागकर पटवारी को बुला लाया नन्ही लाश को तीव्र लहरें अदृश्य कर चुकी थी। [१]

११) स्त्री का कुण्ठाग्रस्त जीवन ---

शिवानी के लघु उपन्यासों में ऐसी नायिकाओं का चित्रण हुआ है। जो अपना जीवन कुण्ठा में या कुण्ठाग्रस्त जीवन जी रही है।"तर्पण"लघु उपन्यास में भाई किशना का विवाह होने पर"पुष्पा पन्त ने जानबूझकर ही अपने यौवन का गला घोटकर रख दिया था।' [२]

'माणिक' लघु उपन्यास में नलिनी मिश्रा आजन्म कौमार्य व्रत धारण करती है।

विविध समस्याए ---

शिवानी के लघु उपन्यासों में अन्य समस्या निम्न लिखित है। जिन में कुछ वैयक्तिक समस्याए भी है।

१ करि छिमा - शिवानी - सरस्वती विहार - द्वि.संस्क.,१९७४,पृ.३४।

२ तर्पण - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - प्र.संस्क.,१९७७,पृ.३१ और ३२।

१)　अनाथ बच्चों की समस्या ---

स्त्री-पुरुष के अनैतिक सम्बधों में बच्चों को उसके माँ-बाप समाज की नींदा से उसे बाल्यावस्था में अकेला छोड देते है। इन अनाथ बच्चों को समाज में स्थान नही मिलता, पल-पल मर अवहेलना की जाती है। आगे चलकर वे अनाथ बच्चे गुनाहगारी प्रवृत्ति की ओर बढते है।

'मोहब्बत' लघु उपन्यास में रोबर्ट-वैदेही के अनैतिक सम्बन्धोंमें मोहब्बत नामक बेटे का जन्म होता है। समाज के डर से वैदेही के घरवाले अनाथालय में भर्ती करवा देते है। मोहब्बत लावारिस संतान है जो जबरदस्ती से चंदा वसूल करता दिखाई देता है।

'तीसरा बेटा' लघु उपन्यास में सावित्री तीर्थयात्रा से लौटते समय उसे एक अनाथ बच्चा मिलता है। सावित्री उसे अपने घर ले आती है। अपनी जायदाद की आधी वसीयत सावित्री अनाथ बच्चा गंगाधर के नाम लिखवा देती है। सावित्री के सगे बेटे उसे अपना भाई नही मानते। गंगाधर सावित्री से अपने जन्म के बारे में पूछता है तब वह कहती है' पता नही कैसे आदमी के हाथ तू पडता। तुझे तो मैंने बताया है ना, हमारे देश में ऐसे भी राक्षस है, जो नन्हे-नन्हे बच्चों को चुराकर उन्हे अंधा-लूला बना भीख मंगवाते है और ऐसे दानव स्टेशनो में ही घूमते रहते है, फिर क्या आज तक कभी एक पल को भी मैंने तुझे यह लगने दिया है कि तू अनाथ है ?' १
इस प्रकार लेखिकाने संकेत किया है कि अनाथ बच्चों को गोद लिया जाय ताकि उन्हे नया जीवन मिले।

'किशनुली का ढाँट' लघु उपन्यास में किशनुली अनाथ पगली युवती है। कक्का रुपी घिनौनी मनोवृत्ति के कौआ किशनुली का जीवन बरबाद कर देता है। प्रस्तुत लघु उपन्यास में किशनुली अनाथ समस्या का उतम उदाहरण है।

'तर्पण' लघु उपन्यास में माँ-बाप की मृत्यु होने पर पुष्पा और किशना अनाथ होते है जिनका अतीत अंध:कारमय है।

१　तीसरा बेटा - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स, प्र.सं., १९८४, पृ.८३।

२) वृध्द समस्या —

वृध्द समस्या संसार में प्रत्येक व्यक्ति की समस्या है। प्रस्तुत समस्या का समाधान वृध्दाश्रम है परंतु आजकल सामान्य वृध्द व्यक्ति के लिए वृध्दाश्रम में प्रवेश मिलना मुश्किल हो गया है क्योंकि वहाँ बडी रकम की माँग की जाती है और वह माँग सामान्य व्यक्ति के बस की बात नहीं है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में अधिक नहीं परंतु कम मात्रा में प्रस्तुत समस्या की ओर संकेत किया है। `पूतोंवाली` लघु उपन्यासों में शिवसागर - पार्वती दम्पति के पाँच बेटे है। लेकिन माँ-बाप की वृध्दावस्था में कोई एक बेटा भी उन्हें सहारा नहीं दे पाता।

`तीसरा बेटा` लघु उपन्यास में सावित्री वृध्द हो गयी है। अनिरुध्द, अशोक उच्चपद पर नौकरी कर रहे है। वे वृध्द माँ की शुश्रुषा नही कर पाते लेकिन अनाथ गंगाधर सावित्रीका वृध्दावस्था में आधार स्तंभ बनकर खडा रहता है।

३) शराबपान की समस्या —

शराब पान आज की जटिल समस्या है। व्यक्ति अपने जीवन में कुछ त्रुटियाँ महसूस करता है उन त्रुटियों को भूलाने के लिए शराब पान की आदत जड जाती है। शराब के दुष्परिणाम मन के साथ शरीर पर भी होते है।

`कैंजा` लघु उपन्यास में नंदी के साथ सुरेश का विवाह न होने पर सुरेश का मानसिक संतुलन खो जाता है। वह शराब, गांजा, चरस व्यसनों के आहारी जाता है। सुरेश `गर्ब्यांग के अनूठे आसव की बोतलें खरीद लाता और अपने सेल को सँवारकर जाडे-भर का समुचित प्रबंध कर लेता। उसी विशुध्द आसव प्रदत्त लालिमा से रंगी उसकी लाल डोरीदार आँखे कभी कभी कपाल पर चढ जाती।`[१] सुरेश ने नित्य नशा पान करने से उसमें ही उसका अन्त हो जाता है।

---

१ कैंजा - शिवानी - हिन्द पौकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज - सं.१९९१, पृ.१७।

`बदला` लघु उपन्यासों में अजकुमार शराबी है, जुआरी भी है, वह अपनी सम्पूर्ण धनसंपत्ति जुए पर लगाता देता है। इस प्रकार केवल शिवानी ने नारी समस्याओं चित्रित न करके पुरुष वर्ग की कहीं समस्याओंका जिक्र भी अपने लघु - उपन्यासों में किया है।

पाश्चात्य रहन सहन का अंधानुकरण करना भारतीयों की मूल प्रवृत्ति है। आज पाश्चात्य नारी का अनुकरण भारतीय नारी कर रही है। `माणिक` लघु उपन्यास में दीना बाटलीवाला धूम्रपान करती है। प्रस्तुत समस्या नारियों के संदर्भ में आज उग्र स्वरुप धारण कर रही है।

४) <u>अंधविश्वास की समस्या</u> --

आज चरम वैज्ञानिक उन्नति के पश्चात भी हमारे समाज का बहुत बड़ा अंश विशेषकर ग्राम्य समाज,अंधविश्वास एवं भ्रान्त धारणाओं के पाश में मुक्त नही हो पाया है। ग्राम्य समाज में व्याप्त इन अंध मान्यताओं के फलस्वरुप ही हमारे बहुत से गाँव प्रगति नही कर पा रहे है। इनके पिछड़ेपन का एक बहुत बड़ा कारण इन्हीं अंधविश्वासों के प्रति विश्वास एवं आस्था का प्रबल भाव है। यहाँ धर्म का वास्तविक यथार्थ रुप तो बिसर गया है।` [१]

`शिवानी के लघु उपन्यासों में कुमाऊनी ग्रामों का चित्रण मिलता वहाँ धर्म के प्रति आस्था विशिष्ट मर्यादासे परे दिखाई देती है। `कैंजा` लघु उपन्यास में नंदी के कुंडली में विवाह के उपरान्त घोर वैधव्य है इसलिए वह विवाह नही करती शिवानी के लघु उपन्यासों के पात्र उच्चशिक्षित,संस्कृत होकर धर्म के प्रति आस्था, अंधविश्वास को मुँह तोड़ जबाब नही देते।

`रथ्या` लघु उपन्यास में वसंती की जन्म कुंडली किमलानंद के जन्मकुंडली से न मिलने के कारण जन्मभर अविवाहित रहती है। यहाँ कुंडली पर विश्वास रखना अंधविश्वास ही है।

---

१ महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता - डा.शशि जैकब - जवाहर पुस्तकालय,प्रथम संस्करण,१९८९, पृ.१०२।

'कृष्णावेणी'' लघु उपन्यास में कृष्णावेणी से दिव्य दृष्टि प्राप्त है। दिव्य दृष्टि अंधविश्वास की समस्या है।

जंत्र-मंत्र, जादू टोना अंधविश्वास की जड़े मजबूत कर देते है। 'गैंडा' लघु उपन्यासमें सुपर्णा अपनी सहेली राज को अपने पति से दूर करने के लिए एक मौलवी के पास जाती है। मौलवी के साह्यता से जादू टोना करके राज के अपने पथ में आयी रुकावट दूर करना चाहती है। राज की मृत्यू होटल में जहर मिलावटी खाना खाने से होती है। परंतु यहाँ सुपर्णा मौलवी के कृत्यों का चमत्कार मानती है।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में कुमाऊनी ग्रामों में प्रचलित अंधविश्वास समस्याओंका चित्रण उपलब्ध है।

५) राजनीति में शील भ्रष्ट व्यक्तियों की समस्या —

राजनीति देश की महत्वपूर्ण इकाई है। स्वातंत्र्य पूर्व काल में देश की सेवा करना एक व्रत माना जाता था। परंतु स्वातंत्र्योत्तर काल में राजनीति में व्यापारी वृत्ति आ गयी है। राजनीति में शील भ्रष्ट लोग अपने कुकर्मों पर नकाब ओढ़कर स्वंय को जनता जनार्दन समझ रहे है। ऐसी ही व्यक्ति रेखा का चित्रण 'तर्पण' लघु उपन्यास में विद्यमान है। भोलादत्त गाँव के नेता है। जिन्होंने १३ साल की अल्पायु पुष्पा पर अपने बल का प्रयोग किया है। कुछ वर्षों के बाद पुष्पा जिस स्कूल में प्रधानाध्यापिका है, उसी स्कूल में भोलादत्त मंत्री बनकर आते है। पुष्पा भोलादत्त की हत्या करवा देती है। शायद भोलादत्त की हत्या के पीछे लेखिका का स्पष्ट प्रयोजन है कि, राजनीति में भ्रष्ट व्यक्तियों को उनके कुकर्मों के फल जरूर मिलने चाहिए।

'करिए छिमा' लघु उपन्यास में श्रीधर ग्राम की न्याय पंचायत का प्रमुख है। हीरावती ने पिरमावती के पति के साथ अनैतिक संबंध रखने के जुल्म में श्रीधर हीरावती को ग्राम से बहिष्कृत करवा देता है और कुछ दिनों में हीरावती के साथ अपने अनैतिक संबंध प्रस्थापित कर देता है। इस दरम्यान श्रीधर मंत्री बनते है। हीरावती श्रीधर के बच्चे की माँ बनती है और समाज में श्रीधर की जो प्रतिमा बनी हुयी है।

वह न गिर जाए इसलिए भ्रूण हत्या कर देती है।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में राजनीति में शील भ्रष्ट व्यक्तियोंकी समस्याए चित्रित की है। श्रीधर वेश्यागमन करते है, तो भोलादत्त बलात्कार, इस प्रकार के मंत्रियों के कुकर्मों पर शिवानी ने प्रकाश डालने की चेष्टा की है।

६) निर्धनता से उत्पन्न समस्या --

निर्धनता से निराशा, दीनता, भोजन, आवास, एवं वस्त्रोंका निम्न स्तर आदि समस्याओंकी उपज होती है। विवाह प्रसंगपर तो वर की आर्थिक स्थिति देखी जाती है। प्रस्तुत बात 'माणिक' लघु उपन्यास में उपलब्ध है। रंभा अपना प्रेमी संगीत शिक्षक है उसके साथ भाग जाना चाहती है। जब नलिनी से पता लगता है तब नलिनी रंभा से कहती है "एक तीन कौडी के छोकरे उस म्यूजिक मास्टर के साथ घर बसाकर क्या तु कभी सुखी हो सकती थी।"[1] इस प्रकार संगीत शिक्षक की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वह रंभा से विवाह नही कर पाता।

'पाथेय' लघु उपन्यास में डा.तिलोत्तमा ठाकुर के पिता कभी वे बहुत बड़े जमींदार थे, किंतु अब सब कुछ ही बिक गया है।[2] यहाँ तक की तिलोत्तमा के विवाह के लिए पर्याप्त धन न होने के कारण टी.बी.ग्रस्त प्रतुल से विवाह करना पड़ता है। और प्रतुल की मृत्यू होने पर तिलोत्तमा विधवा होती है।

'जब आवे संतोष धन सब धन धूरि समान' के अनुसार धन का उपयोग योग्य प्रकार से करना अनिवार्य है। 'कैंजा' लघु उपन्यास में सुरेश के पिता की मृत्यू के पश्चात उसकी पूरी जायदाद बैन्क में गिरवी पडी थी और अब उसे छुडाना उसके लिए एक प्रकार से असंभव था।[3] इस प्रकार सुरेश के निधानता के कारण उसकी

---

१ माणिक - शिवानी - सरस्वती विहार, प्र.सं., १९७७, पृ.३७।
२ पाथेय - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सं.१९९१, पृ.९९।
३ कैंजा - शिवानी - - वही - पृ.१६।

जायदाद हाथ से चली गयी थी। और सुरेश ने वकालत पास करने पर भी नौकरी नही करता।

७) रोगियों की समस्या --

रोग मानव जीवन की भयंकर समस्या है। शिवानी के अधिकतर लघु उपन्यासों में कुष्ठरोग का चित्रण किया है। कुष्ठरोग के संदर्भ में अनेक भ्रान्तियाँ प्रचलित है उनमें से एक इस प्रकार है कि, कुछ लोग कुष्ठरोग पूर्वजन्म के पाप का मानते है। परंतु नियमित उपचार से कुष्ठरोग का निर्मूलन हो जाता है। 'कृष्णकली' बड़े उपन्यास में कुष्ठरोगों की समस्याओं का जिक्र हुआ है।

शिवानी के लघु उपन्यास के कुष्ठरोगी निम्न वर्ग के है, तो, टी.बी., कैन्सर, संबंधित रोगी उच्चवर्ग के है। शिवानी के लघु उपन्यास और उनके रोग और संबंधित वर्गीय रोगी निम्नलिखित है।

१) "गैंडा" - एपेंडिक्स - उच्चवर्गीय रोगी
२) "विषकन्या" - मिरगी, हार्ट अटैक - उच्चवर्गीय रोगी
३) "पूतोंवाली" - कैन्सर - उच्चवर्गीय रोगी
४) "तीसरा बेटा" - दिल का दौरा - उच्चवर्गीय रोगी
५) "पाथेय" - टी.बी., पागलपन, टायफाइड - उच्चवर्गीय
६) "माणिक" - रक्तचाप, डायबेटिक - उच्चवर्गीय
७) "किशनुली का ढाँढ" - कुष्ठरोग - निम्नवर्गीय रोगी
८) "करिए छिमा" - कुष्ठरोग - निम्नवर्गीय रोगी
९) "कृष्णवेणी" - कुष्ठरोग - निम्नवर्गीय रोगी
१०) "रथ्या" - लघु उपन्यास में फणीरालसक, पारिगामिक महापदम, पवीतुप्लव, तालुकंटक, आदि रोगों के नाम आये है।

८) हरिजन समस्या --

'हरिजन' शब्द का प्रयोग म.गांधीजी ने किया उनके अनुसार एक विशिष्ट जाति के लोग जो भगवान की संतान है। हरिजन समस्या धार्मिक और सामाजिक धरातल से उत्पन्न होकर मानव समाज को कुंठित कर देती है। 'इस समस्या के कारण मानव में समता के स्थान पर विषमता, सहयोग के स्थान पर असहयोग की भावना जाग जाती है।[१] 'आज इसी वर्ण व्यवस्था के कारण हरिजनों पर अत्याचार होते आ रहे है। जिसका जिक्र "विवर्त" लघु उपन्यास में हुआ है लीलावती कहती है कि हरिजनों को अब भी मशालों-सा जलाया जाता है, वर्षों का दासत्व भोगकर भी हम अपनी आत्मा को मुक्त नही कर पाये'।[२]

इस प्रकार अधिक तो नही लेकिन कम मात्रा में शिवानी ने प्रस्तुत समस्या को दिखाया है।

९) ऋण की समस्या --

ऋण एक सामाजिक एवं आर्थिक समस्या है।" ऋण एक ऐसा रोग है जो व्यक्ति को एक बार पकड लेने पर शीघ्र छोडता नही। महाजन के अर्थ जाल से मुक्त होना दुष्कर ही है।'[3] पिता का कर्ज चुकाने में पुत्र की पढाई छूट जाती है। 'रथ्या' लघु उपन्यास में इस ओर संकेत किया है --

१ गोदान - विविध सन्दर्भों में - रामाश्रय मिश्र - उन्मेष प्रकाशन, प्र.सं., १९८६, पृ.११८।

२ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स - प्र.संस्क. १९८४, पृ.६०।

३ राही मासूम रजा के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डा.मुहम्मद फरीदुद्दीन, प्रकाशक ऋषभ चरण जैन एवंम सन्तति प्रथम सं.१९८४, पृ.१३२।

विमलानंद के पिता की मृत्यु के पश्चात उनका छोडा गया कर्ज चुकाने में ही बेचारे की पढाई छूट गई।[1] फलस्वरुप विमलानंद को अध्यापक बनना पड़ता है।

१०) आत्महत्या की समस्या —

आत्महत्या अपनी इच्छा से एवं जानबूझकर किया गया आत्म हनन है। आत्महत्या करनेवालों की संख्या जितनी है, उतने आत्महत्या के कारण है। 'रथ्या' लघु उपन्यास में आत्महत्या की समस्या दिखाई देती है। वसंती के पिताने "नैनीताल के ताल में कूदकर आत्महत्या की थी। जुए में स्वर्वस्व हारकर, उसके पाषाण देवी के पास ताल में डूबने की खबर तीसरे दिन गाँव पहुची तो विक्षिप्त जवान पत्नी भी आधी रात को अपने आँगन में लगे सेब के पेड की डाल पर फाँसी के फंदे में लटक गई।[2] इस प्रकार वसंती के पिता जुए में हारकर आत्महत्या करते तो पत्नी पति के मृत्यु की समाचार सुनकर आत्महत्या कर देती है।

'कृष्णावेणी' लघु उपन्यास में कृष्णावेणी की माँ बताती है कि कैसे जान बूझकर उस तीखी घाटी में कार को कुदा गई लडकी (कृष्णावेणी) डूट नीडेड गटस स्योर इट डिड - आत्महत्या की थी, इसमें कोई शक था ही नहीं।[3]

११) युद्ध की समस्या —

युद्ध एक सामाजिक विघटन है। युद्ध संसार की शान्ति, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, विचारों का स्वतंत्र आदान प्रदान और विभिन्न समाजों के लोगों के बीच संदेश वाहन को नष्ट कर देता है। युध्द केवल अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को ही भंग

---

१ रथ्या - शिवानी - सरस्वती विहार - प्र.सं., १९८१, पृ.२१।
२ — वही — पृ.८ ।
३ कृष्णावेणी - शिवानी - सरस्वती विहार, प्र.सं., १९८१, पृ.१३।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

नही करता । वह व्यक्तियों की नैतिक अवस्था को गिरा देता है।[१] ` कृष्णावेणी ` लघु उपन्यास में प्रस्तुत समस्या का उल्लेख मिलता है। ` द्वितीय युध्द की विभीषिका ने भारत के गगनांगन को भी म्लान कर दिया था । जवान लड़कियाँ - अकेली यात्रा नही कर सकती थी । कब मर्कटमुख गोरे सिपाहियों से भरी ट्रेन में उनसे टकरा जाएँ। कलकत्ता में जापानी बम गिरने की अफवाह ने पूरे बंगाल को सहमा दिया था । देखते ही देखते कलकत्ता का अर्धांश खाली हो गया था, एकसे एक दामी ढाकाई साड़ियाँ, दस दस रुपये में बिक रही थी, स्टेशन रंगीन गोटा लगी, लाल चूनरों का घूंघट काढ , अनावृत्त और उदर की झलके दिखाती मारवाडी सेठानियों से भरा रहता । सुनने में आ रहा था कि परीक्षाएँ नहीं होंगी । शीघ्र ही युनिवर्सिटी बंद हो जाएगी।[२] ` इस प्रकार युध्द की कालावधि में अनेक समस्याए मानव समाज को घेरी रहती है।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में ऐसी कोई भी सामाजिक समस्या नहीं है जिसका उल्लेख न हुआ हो ।

---

१ राही मासूम रजा के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन -
डा.मुहम्मद फरीदुद्दीन -
ऋषभ चरण जैन एवंम् सन्तति,प्रथम संस्करण,१९८४,
पृ.१३४ ।

२ कृष्णावेणी - शिवानी - सरस्वती विहार, प्र.सं.१९८१, पृ.१३ ।